आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 18/12/2023; Published: 26/12/2023

कविता

दर्द "सभीका" बोल रहा है!

- अमिता रविदुबे

नाच दुशासन डोल रहा है
स्वार्थ सदा अनमोल रहा है।।

दुष्ट पड़ोसी देश मिले जो।
नाश नशे का घोल रहा है।।

हिंसक हैवानी जय कारे।
आँख दिखाकर बोल रहा है।

चित्र भयावह अंध न्याय का।
सच सब झूठा पोल रहा है।।

मानवता चुप बैठे गिरवी।
ज़ख्म सभीके छोल रहा है।।

लूट रहे दुर्योधन बेटी।
राज सदा मिल-जोल रहा है।

माँ -बहनें दुनिया में रोती

दंश भरा माहौल रहा है।

बर्बरता इतिहास पलट लो।
खंडित अब भू-गोल रहा है।।

भीड़ नपुंसक मोहित कुर्सी।
जन मन परदा खोल रहा है।

नीर नहीं आँखों में लगता।
दर्द सभीका बोल रहा है।।

****